Q. थियोडोर रूजवेल्ट की गृह-नीति पर प्रकाश डालें?

या

Q. थियोडोर रूजवेल्ट के सुधारों पर प्रकाश डालें?

Ans:- थियोडोर रूजवेल्ट का संयुक्त राज्य अमेरिका के इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। कहा जाता है कि उसने अमेरिका में समाजवाद के खतरे को दूर करने के लिए सुधारों का समर्थन किया। यह कहा जाता है कि उसके सभी राजनैतिक विश्वासों के पीछे यही नकरात्मक भावना थी। व्हाइट हाउस में प्रवेश करते हुए उसने स्वीकार किया था कि "मैं नहीं कह सकता कि मैं सामाजिक सुधार के लिए कोई स्पष्ट योजना या दूरगामी कार्यक्रम लेकर राष्ट्रपति बना हूँ। इस समय (1901) काँग्रेस में रूढ़िवादियों का प्रभाव था। सीनेट में ऑल्ड्रिक और प्रतिनिधि-सभा में जोसेफ केनन का प्रभाव था। उसने इन नेतागणों को नाराज किए बिना जन-समर्थन प्राप्त करने की रण-नीति अपनाई। वह अपने प्रथम कार्यकाल में अधिक महत्वपूर्ण व्यवस्थापन नहीं कर सका किन्तु कुछ प्रारम्भिक कदम अवश्य उठाए।

(1) न्यास-विरोधी अभियान - टी. आर ने निगमों की तानाशाही के विरुद्ध कई आक्रमण किए। 3 दिसम्बर, 1901 को काँग्रेस को भेजे अपने प्रथम सन्देश में उसने कहा - "अमेरिकी जनता के ~~अनुसार~~ मतानुसार न्यासों की अनेक विशेषताएँ जनकल्याण के लिए घातक हैं। इसलिए इस गठबन्धन और केन्द्रीकरण का निरीक्षण की प्रार्थना पर व्यापार और श्रम विभाग स्थापित किया और जाँच पड़ताल के लिए निगमों का ब्यूरो इसके साथ संलग्न किया गया। उत्तर-पश्चिम में बड़े रेल-मार्गों पर एकाधिकार हो गया था। अतः टी. आर. ने शर्मन एन्टी-ट्रस्ट अधिनियम के अन्तर्गत न्यायिक कार्यवाही करने का कदम उठाया। 1902 में उसने एटार्नी जनरल को आदेश दिया कि वह नार्दर्न

सिक्योरिटीज कम्पनी के विरुद्ध मुकदमा चलाये। इसके कारण व्यापारी समाज चौंक उठा। सुनते ही कम्पनी का संचालक, जे. पी. मार्गन राष्ट्रपति का इरादा समझने हेतु वाशिंगटन आया। राष्ट्रपति ने संघ सरकार की सत्ता के प्रश्न पर कोई सौदेबाजी नहीं की। 1904 में सर्वोच्च न्यायालय ने नार्दर्न सक्योरिटीज के गठबन्धन को भंग कर दिया। यद्यपि इससे हेरीमेन, हिल या मार्गन को कोई हानि नहीं हुई किन्तु सुधारवादियों का रूजवेल्ट की न्याय-विशेषी नीतियों का अभ्यास मिल गया। टी. आर. दिखाना चाहता है या कि सरकार बड़े निगमों से भी उच्चतर है। उसके एटार्नी ने इसी प्रकार के 25 मुकदमें तेल, तम्बाकू आदि से सम्बन्धित गठबन्धनों पर चलाए। इनमें सरकार की जीत हुई। यह अनियन्त्रित एकाधिकार की शक्ति के विरुद्ध चुनौती थी।

(2) कोयला हड़ताल में हस्तक्षेप – टी. आर. का एक अन्य का एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य 1902 की कोयला हड़ताल में हस्तक्षेप था। इसके द्वारा उसने एक नयी परम्परा प्रारम्भ की। जॉन मिचेल के नेतृत्व में एक लाख पचास हजार खान कर्मचारियों ने काम रोक दिया था। वे अधिक मजदूरी, यूनियन की मान्यता और नौ घंटे दिन की माँग कर रहे थे। इससे कोयले की कमी आने लगी किन्तु समझौते की आशा नजर नहीं आती थी। फलतः संघ सरकार ने हस्तक्षेप किया। यह हस्तक्षेप हेज (1877) तथा क्लीवलैंड (1894) की भाँति मालिकों का मजदूरों के प्रति समानुभूति दृष्टिकोण था। उन्होंने मिचेल से बात करना स्वीकार कर लिया।

टी.आर. ने मिचेल और कोयला संचालकों को स्वीकार नहीं किया। जब रूजवेल्ट ने खानों को सरकारी अधिकार में लेने की योजना बनायी तो मार्गन के दबाव से संचालकों ने राष्ट्रपति की बात मानी। फलत: हड़ताल समाप्त हुई और मजदूरों का वेतन बढ़ा तथा काम के 9 घंटे नियत हुए। संघ सरकार ने मजदूरों के विवादों को पहली बार ऐसा हस्तक्षेप किया जिसमें सम्पत्ति की रक्षा के स्थान पर जनहित में समझौता कराने की चेष्टा की गई थी।

3. भू - संरक्षण - टी.आर. ने भू-संरक्षण के कार्यक्रमों को प्रोत्साहन दिया। अभी तक सरकारी भूमियों की नीति का प्रशासन ऐसे अधिकारियों द्वारा किया जाता था जो जन कल्याण की अपेक्षा व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति के लिए निर्णय लेते थे। राष्ट्रपति ने वन-सेवा के निदेशक की सहायता से एक भिन्न दृष्टिकोण बनाया। उसने प्राकृतिक विकास के साधनों के विकास की चेष्टा की। उनकी वनीतियों ने व्यक्तिवादी सिद्धान्तों के प्रति जनता में अविश्वास जागृत किया।

4. खाद्य पदार्थ निरीक्षण - 1906 में माँस, विशुद्ध भोजन तथा दवाई अधिनियम पास किए गए। माँस - निरीक्षण के अन्तर्गत इसे पैक करने वाली फैक्ट्रियों का निरीक्षण किया जाने लगा, हानिकारक खाद्य - पदार्थों की बिक्री पर रोक लगाई गई और खतरनाक दवाइयों पर सही लेबल लगाने की व्यवस्था की गई। ये अधिनियम रामभरोसे सिद्धान्त पर कड़ा प्रहार थे। रूजवेल्ट ने राजनीतिक तथा आर्थिक सुधार के लिए काँग्रेस को दूसरे प्रस्ताव पर भी सुझाए किन्तु पुराण - पन्थी नेताओं के विरोध के कारण स्वीकृत नहीं हो सके।

5. वन्य प्रदेशों एवं सम्पदा के सम्बन्ध में लोक अभिरुचि - रुजवेल्ट ने इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए लोकमत को जाग्रत एवं आकर्षित करने हेतु वन्य सेवा के कार्य का बहुत प्रचार किया। स्थानीय एवं राज्य सेवाओं के विभागों को इस ओर कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया। 1907 ई० में अन्तर्देशीय जल मार्ग आयोग की स्थापना की गई जिसका उद्देश्य नदियों, भूमि, वनों जल-शक्ति और जल परिवहन आदि पर सम्पूर्ण सामग्री एकत्र कर अपनी सिफारिशें प्रस्तुत करना था। इस कमीशन की सिफारिशों के अनुकूल 1907 ई० में राष्ट्रीय संरक्षण अधिवेशन बुलाया गया। इस अधिवेशन में न केवल वन्य संरक्षण पर अपितु खनिज पदार्थ, जल सिंचाई और भूमि क्षय के सम्बन्ध में अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। इन निर्णयों के अनुकूल बहुत से राज्यों ने संरक्षण संघ की स्थापना की गई जिसके अध्यक्ष थे हार्वर्ड के इलियट। एक राष्ट्रीय संरक्षण आयोग का गठन हुआ जिसकी अध्यक्षता कर्मठ एवं परिश्रमी गिफर्ड पिंकाट को सौंपी गई। रुजवेल्ट यह जानता था कि संरक्षण की समस्या अन्तर्राष्ट्रीय है अतएव उसने उत्तर अमेरिकी संरक्षण आयोग के माध्यम से सभी अमेरिकी राज्यों का सहयोग प्राप्त किया।

पूर्व के अमेरिकी राज्य वन्य प्रदेश का संरक्षण चाहते थे। परन्तु अधिकांश वन्य प्रदेश पश्चिमी राज्यों में थे। अतएव वे चाहते थे कि सरकार द्वारा इन क्षेत्रों का विकास संरक्षित भूमि के विक्रय से प्राप्त धन से किया जाये। सरकार यह मानने के लिए बाध्य हो गई।

1902 ई० के भूमि उद्धार अधिनियम के अनुसार एरिजोना के महान् रुजवेल्ट बाँध, इडाहो के

एरोरीक बाँध तथा रियोग्राण्ड नदी पर एलीफैंट बट बाँध, कोलेरेडो नदी पर वाल्टर बाँध, कोलम्बिया नदी पर महान खड्ड और अन्य दस बाँध के काम प्रारम्भ कर दिए गए। सम्पूर्ण राष्ट्र के सम्मख यह समस्या अब महत्वपूर्ण बन गई। जाग्रत लोकमत ने भावी प्रशासनों के लिए, बाँध, कृषि, सिंचाई, वन संरक्षण आदि कार्यक्रमों के लिए एक विस्तृत मार्ग प्रशस्त किया। रूजवेल्ट ने पाँच राष्ट्रीय उद्यानों, चार राष्ट्रीय शिकार-गृहों एवं इक्यावन पक्षी संरक्षणालयों का निर्माण भी कराया।

निष्कर्ष

बहुत कुछ किया जा चुका था लेकिन बहुत सा कार्य शेष था। लाखों टन कोयला खदानों के गलत तरीकों से बेकार हो जाता था। लाखों टन तेल भी इसी प्रकार गलत ढंग से निकाले एवं पाइपों से भरने से नष्ट हो जाता था। प्राकृतिक गैस का संरक्षण भी नहीं हो पाया था। जंगलों की आग हजारों एकड़ जमीन बेकार कर देती थी। पूर्व एवं दक्षिण की इमारती लकड़ियों का भी व्यापारियों द्वारा निजी स्वार्थों के लिए विशाल पैमाने का उपयोग हो रहा था। परन्तु इतना अवश्य स्वीकार करना होगा कि राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट के आगमन तक उसके किसी अन्य उत्तराधिकारी में निर्माण का इतना संकल्प एवं नेतृत्व नहीं था जो उसके रचनात्मक कार्य को आगे बढ़ा सके।